# गांधी समग्र

## पवित्र कर्म से अप्राकृतिक मृत्यु तक

(भाग-1)

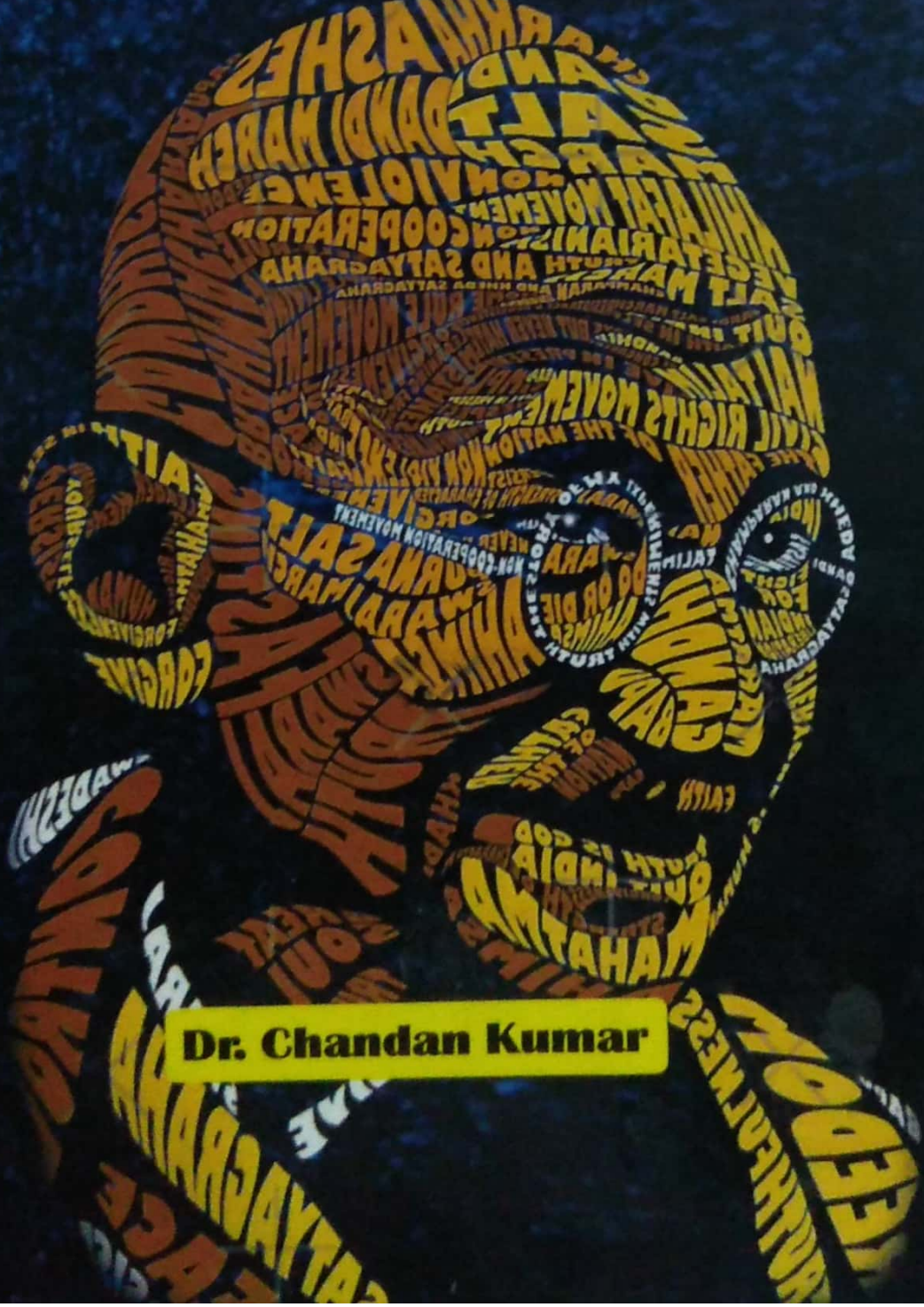

Dr. Chandan Kumar

© Editor

'Authors/contributors are solely responsible for the originality/ authenticity/accuracy of the ideas/ information / views/content/ data produced in their respective papers. Publisher and the Editor shall not be responsible for any liability arising on account of any civil or criminal proceeding(s) in any court/tribunal/judicial body under any law for the time being in force.'

All rights including copyrights of translation etc are reserved and vested exclusively with the editor. No part of this publication shall be reproduced or transmitted in any form or by any means, including electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise or stored in any retrieval system of any nature without the express permission of the editor

| | | |
|---|---|---|
| **Editor** | : | डॉ० चंदन कुमार |
| **Publisher** | : | **Swaranjali Publications Pvt. Ltd.**<br>FF1, Plot No. 1B, Sector 10-B<br>Vasundhara - 201012<br>Ghaziabad, U.P. |
| **Phone** | : | +91-8700124880, 9810749840 |
| **E-mail** | : | swaranjalipublication@gmail.com |
| **Book** | : | गांधी समग्र : पवित्र कर्म से अप्राकृतिक मृत्यु तक (भाग-1) |
| **Edition** | : | December 2020 |
| **ISBN** | : | 978-93-90573-40-0 |
| **Price** | : | ₹ 345/- |
| **Printed By** | : | Swaranjali Printers |

CamScanner

# विषय सूची


1. राष्ट्रीय आन्दोलन में महात्मा गाँधी के सर्वधर्म समभाव का एक लेखा–जोखा ........ 1
डॉ. चंदन कुमार

2. वर्तमान में गांधी–दर्शन (अहिंसा) की प्रासंगिकता ........ 9
डॉ. जोनाली बरुवा

3. गाँधी दर्शन में स्त्री शक्ति ........ 16
डॉ. रीना सिंह

4. गाँधी दर्शन में धर्म और नैतिकता ........ 21
डॉ० विश्वामित्र पाण्डेय

5. गांधी और मानवाधिकार ........ 26
डॉ. अमित कुमार उपाध्याय

6. गाँधी और स्वदेशी ........ 34
डॉ० अशोक कुमार सिंह

7. गांधी जी और बुनियादी शिक्षा ........ 42
डॉ. एम. एम. शुक्ला

8. महात्मा गांधी एवं स्वदेशी ........ 52
डॉ. नागरत्ना गनवीर

9. गाँधी और नारी उत्थान का इतिहास: उत्तर बिहार में पर्दा–प्रथा एवं खादी उद्योग ........ 57
डॉ. गोपाल कुमार (रोसडा)

10. गाँधी : एक पत्रकार ........ 64
डॉ. बिनीता कुमारी साहु

[redacted]
प्रो. अनिल कुमार हनुमान दास गुप्ता

12. महात्मा गांधी और नारी विमर्श ........ 75
मिस शबनम भारती

[redacted]
डॉ. बबिता गुप्ता

14. ग्लोबल वार्मिंग और गांधी का दर्शन ........ 85
डॉ. नन्द किशोर साह

15. महात्मा गाँधी और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ........ 90
डॉ. संतोष कुमार

16. गांधी और स्वच्छता ..... 97
ललन कुमार मंडल
17. महाराष्ट्र के असहयोग आंदोलन में महात्मा गांधीजी की भूमिका ..... 103
श्री सिद्धार्थ दवने
18. वर्तमान समय में गांधी विचार की प्रासंगिकता ..... 110
डॉ. हरिभाई एम. पटेल
19. राष्ट्रभाषा हिन्दी का सवाल और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ..... 118
डॉ. अच्छे लाल
20. गांधी और गांधीवाद (सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, न्यासिता, सर्वोदय) ..... 125
डॉ. अर्चना कुमारी
21. गांधीवाद और अर्थव्यवस्था ..... 131
डॉ. बलकार सिंह
22. गाँधी का स्वदेशी मंत्र : चरखा और खादी ..... 137
डॉ. मिनी विश्वकर्मा
23. गांधी और चम्पारण आन्दोलन ..... 141
मरियम मुर्मू
24. महात्मा गाँधी का स्वदेशी दर्शन ..... 147
गुंजेश गौतम
25. गांधीजीः नारी समर्थन में विचारधारा एवं वर्तमान में उसकी प्रसांगिता ..... 157
प्रज्ञा शिखा
26. गाँधी चिन्तन के दार्शनिक आधार एवं वर्तमान संदर्भ में उपयोगिता ..... 165
हरमनदीप सिंह
27. गांधी और धर्म ..... 175
प्रमिला टोप्पो
28. गांधी और कार्ल मार्क्स ..... 181
अजय कुमार
29. गांधीवादी समाजवाद और समाजवाद ..... 186
अरबिंद कुमार
30. गाँधी और राजनीतिक चिंतन ..... 192
जागृति तिवारी
31. गांधी और अस्पृश्यता ..... 198
पप्पु ठाकुर
32. शांति और एकता पर गांधी के विचार ..... 202
बाबू लाल मीणा, डॉ. महेन्द्र कुमार घाकड़

CamScanner

# 12. महात्मा गांधी और नारी विमर्श

**मिस शबनम भारती**
असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास विभाग
गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर

**सारांश**

प्रस्तुत शोध आलेख में गांधी जी द्वारा नारी उत्थान संबंधी विचारों व कार्यों का उल्लेख किया गया है। भारत जैसे देश में जहां पर नारी को 'यत्र पूज्यंते रमंते तत्र देवताः' कहकर एक सम्मान योग्य स्थान दिया गया है वहीं इसी देश में नारी को उसके अधिकारों, शिक्षा, समानता से भी वंचित रखा गया। अंधकार के इस गर्त से नारी को बाहर निकालने के लिए गांधी जी ने भरपुर कोशिश की।

स्त्रियों के संबंध में गांधी जी के विचार जो उस समय महत्त्वपूर्ण थे, वो आज भी उतने ही प्रासंगिक है। वर्तमान समय में हम प्रतिदिन अखबारों में नारी को अपमानित करने की खबरें पढ़ते है। ऐसे में आज गांधी जी के नारी संबंधी विचारों को जीवन में उतारने की आवश्यकता है।

सत्य और अहिंसा के अप्रतिम पुजारी[1] मोहनदास कर्मचन्द गांधी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की बागडोर थामने वाले नेताओं में अग्रणी स्थान रखते हैं। गांधी जी के संबंध में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा कहते हैं कि महात्मा गांधी जीवन भर उनके लिए प्रेरणा स्त्रोत बने रहे हैं। तिब्बत के धार्मिक नेता दलाईलामा ने भी गांधी जी को अपना आदर्श माना।[2] गांधी जी केवल एक राष्ट्रवादी नेता ही नहीं अपितु स्त्रियों के अधिकारों के हिमायती भी थे। उन्होंने स्त्री व पुरूष में से स्त्री का स्थान ऊँचा माना। उनके अनुसार प्रेम, करूणा, सेवा, समर्पण जैसे गुण स्त्री को देवत्व प्रदान करते हैं। गांधी जी ने सीता–राम, राधा–कृष्ण का उदाहरण देते हुए कहा कि भगवान के नाम में भी सीता और राधा का नाम पहले आता है। यह अकारण नहीं आता बल्कि इसके पीछे भी विशेष कारण है।[3]

गांधी जी के विचारानुसार स्त्री व पुरूष एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इनमें किसी भी तरह का भेदभाव परिवार व समाज के लिए हानिकारक है। इस संसार को सुंदर व सशक्त बनाने में नारी तत्व की भुमिका अहम है। गांधी जी का मत है कि स्वस्थ समाज से ही स्वस्थ राष्ट्र निर्मित होता है। समाज की मुख्य इकाई परिवार है। स्त्री व पुरूष इसके दो पहिये है। यही

गृहस्थ जीवन को आगे बढ़ाते हैं। परिवार में दोनों का महत्त्व एक समान है।[4] गांधी जी ने उस व्यवस्था का विरोध किया जहां पुरूष नारी को अपने से नींचे मानता हो। स्त्री को भी समानता व स्वतंत्रता का उतना ही अधिकार है जितना कि पुरूष को है। जिस तरह पुरूष अपनी प्रवृत्ति के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान का अधिकारी है उसी तरह स्त्री भी अपनी प्रवृत्ति के क्षेत्र में मानी जानी चाहिए।[5] गांधी जी स्त्री व पुरूष की स्वतंत्रता व समानता के पक्षधर अवश्य थे, परंतु वो ये नहीं चाहते थे कि इनमें कोई प्रतिस्पर्धा हो। उनका विचार था कि स्त्री–स्त्री रहते हुए पुरूष बने यानि वो अपना अबलापन त्याग कर वीर व साहसी बने तथा पुरूष–पुरूष रहते हुए स्त्री बने यानि स्त्री की तरह विवेकशील व नम्र बने।[6]

हमारे देश में कन्या के पैदा होते ही उसे पति को खुश करने के तौर–तरीके, भोजन बनाना, साज–श्रृंगार करना आदि सिखाया जाता है। इस तरह स्त्री को एक मनोरंजन की वस्तु बना दिया जाता है। गांधी जी ने इस बात पर आपति जताई। उन्होंने कहा कि यदि वो स्वयं एक कन्या के रूप में जन्म लेते तो इस बात का घोर विरोध करते कि स्त्री पुरूष का मन बहलाने का साधन मात्र है।[7] इसी संबंध में वे आगे कहते हैं कि अगर इसका कोई इलाज है तो वो केवल स्त्री के ही हाथ में है। उसे स्वयं ही आगे आना होगा और स्वयं को भोग–विलास की वस्तु माने जाने वाले विचार का त्याग करना होगा। उसे स्वयं को पुरूषों के मुकाबले कमजोर समझने का विचार त्यागना होगा। उसे अपनी शक्ति को पहचानना होगा।

उस समय बाल–विवाह से स्त्रियों का जो मानसिक व शारीरिक शोषण हो रहा था गांधी जी उसके विरोध में थे। वे इसे समाज के साथ–साथ बालिकाओं के लिए भी घातक मानते थे। उनका कहना था कि बाल–विवाह जितना समाज के लिए घातक है उतना ही बालिकाओं के शरीर का भी सत्यनाश कर डालता है।[8] उनके अनुसार यह अधर्म था क्योंकि जो बालिका गोद में बैठने लायक भी ना हो और उससे शादी करके अपनी पत्नी बना लेना धर्म का कार्य कदापि नहीं हो सकता।[9] इस संबंध में गांधी जी ने समाज को जागरूक किया। गांधी जी के विचार में वही विवाह पवित्र माना जायेगा जिस विवाह में बालिका पुर्ण विकसित हो।

गांधी जी ने विधवा विवाह का पक्ष लिया। उनका कहना था कि जो लड़की कम उम्र में ही विधवा हो गई हो उसे कुंवारी ही माना जाना चाहिये और उसके लिए योग्य वर की तलाश कर दुबारा शादी करनी चाहिये। जिस तरह एक विधुर नौजवान अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद विवाह कर लेता है।

उसी तरह एक नौजवान विधवा को भी यह अधिकार होना चाहिये कि वो पति की मृत्यु के बाद पुनर्विवाह कर सके। हालांकि यहां पर गांधी जी विधवा विवाह के आवश्यक रूप से समर्थक नहीं थे। वे तो केवल उस व्यवस्था के विरूद्ध थे जिसमें बाल विधवाओं को हिन्दू धर्म में एक कलंक के तौर पर देखा जाता था।

गांधी जी दहेज प्रथा के भी विरोधी थे। उनका कहना था कि कोई भी ऐसा विवाह जो धन के लालच में किया जा रहा हो, उसे विवाह नहीं माना जा सकता।[10] उनके अनुसार ऐसे लोगों को समाज से बाहर निकाल देना चाहिये जो दहेज देते हैं या लेते हैं। गांधी जी का मानना था कि केवल कानुन से इस प्रथा को समाप्त नहीं किया जा सकता अपितु इसके लिए सामाजिक संगठनों को जागरूकता पैदा करनी चाहिए। इसके अलावा अन्तर्जातीय विवाह को भी प्रोत्साहित करना चाहिये ताकि कन्या के बाप को योग्य वर के लिए मजबुरी में दहेज न देना पड़े।

गांधी जी स्त्री शिक्षा के पक्ष में थे। उनका कहना था कि यदि स्त्री शिक्षित होगी तो वो अपने पैरों पर खड़ी हो पायेगी और उसके लिए माँ–बाप को योग्य वर तलाशने की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। गांधी जी का मानना था कि जिस स्त्री की कोख में भारत का भविष्य पलता है तथा जो आने वाली पीढ़ी की मार्गदर्शिका है भला उसे हम शिक्षा से वंचित कर एक समृद्ध व सशक्त समाज की कल्पना कैसे कर सकते हैं। गांधी जी ने स्त्रियों की शिक्षा को पुरूषों की शिक्षा से अधिक महत्त्वपूर्ण माना क्योंकि एक शिक्षित स्त्री परिवार व समाज को समृद्ध बनाने, बच्चों के चारित्रिक गुणों को विकसित करने में अहम भूमिका निभाती है। सह शिक्षा के बारे में गांधी जी का विचार था कि इसकी शुरूआत परिवार से ही होनी चाहिए। लड़के और लड़कियों को परिवार में एक साथ स्वतंत्र व स्वभाविक रूप से बढ़ना चाहिए। ऐसा करने से सह शिक्षा अपने आप आ जायेगी।[11] गांधी जी अपनी पत्नी कस्तूर बाई को हमेशा पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करते थे। गांधी जी स्त्री समाज में फैली बुराईयों की वजह अशिक्षा को मानते थे और इसीलिए स्त्रियों को शिक्षित करने पर जोर देते थे।

गांधी जी ने स्त्रियों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वो अपना सारा समय घरेलू कार्यों में न लगाकर अपितु अन्य क्षेत्रों में भी लगाये। उन्होंने स्त्रियों को राजनीति में स्वतंत्र तौर पर भाग लेने के लिए कहा। इसी के फलस्वरूप स्त्रियों ने सार्वजनिक सभाओं में भाग लेना शुरू कर दिया। अंग्रेजी साम्राज्य जिसकी जड़े सारे भारत में फैलती जा रही थी, उस जड़

को काटने के लिए गांधी जी के आह्वाहन पर देश का नारी समाज एक जुट होकर संघर्षरत हो गया। नारी जाति का जागरूक होना यह सिद्ध करता है कि अब स्वतंत्रता निश्चित है।[12] यह गांधी जी का ही प्रभाव था कि स्त्रियों में राजनीतिक व राष्ट्रीय जागृति आई और कस्तुरबा गांधी, कमला नेहरू, विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडु, मीराबेन, सुचेता कृपलानी, साराभाई, मृदुलाबेन, दुर्गाबाई देशमुख, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, नलिनी सेन, डॉ. सुशीला नैय्यर, रामेश्वरी नेहरू आदि ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भुमिका निभाई।[13]

कल तक थी जो चारदीवारी में बंद
आज सीना तान खड़ी हैं।
हुआ असर कुछ ऐसा नारी पर
आजादी की लड़ाई इसने बखुबी लड़ी है।

गांधी जी ने स्त्रियों को स्वावलंबी बनाने के लिए चरखा कातने पर बल दिया। परिणामस्वरूप स्त्रियों ने चरखे कातने शुरू कर दिए। जालंधर के एक कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने भी चरखे कातने शुरू कर दिये। इसी संस्था ने असहयोग आंदोलन में भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया। स्त्रियों ने शराब व विदेशी वस्तुओं का विक्रय करने वाली दुकानों के आगे धरने दिए। यह गांधी जी के नेतृत्व का ही प्रभाव था कि राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के लिए स्त्रियां घर की चारदिवारी से बाहर आई।[14] यहां तक कि राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने की वजह से श्रीमती चंद्रप्रभा दुबे, श्रीमती शांताबाई दुबे, श्रीमती तुलसीबाई, श्रीमती रूकमणी बाई आदि स्त्रियों को जेल तक जाना पड़ा। गांधी जी अच्छी तरह जानते थे कि जब तक स्त्रियां राष्ट्रीय आंदोलन में कंधे से कंधा मिलाकर भाग नहीं लेगी तब तक देश की आजादी संभव नहीं। गांधी जी ने महिलाओं के राष्ट्रीय कार्यों को संपन्न करने हेतु राष्ट्रीय स्त्री सभा की स्थापना की। इसका कार्य महिलाओं को राष्ट्रहित के लिए आगे आने को प्रेरित करना था।

## निष्कर्ष

महात्मा गांधी जी ने अपने विचारों द्वारा स्त्रियों के सशक्तिकरण का कार्य किया। उन्होंने स्त्रियों को पुरूषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलने, स्त्री व पुरूष की समानता, स्त्री शिक्षा, उनके अंदर, आत्मविश्वास जगाना, उनको आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने, उनके राजनीति में भाग लेने संबंधी जो विचार दिए उससे पता चलता है कि गांधी जी महिला सशक्तिकरण के पक्ष

र थे। वे महिलाओं को समाज में आगे लाना महत्त्वपूर्ण समझते थे। उनके विचारों का परिणाम यह निकला कि बहुत से समाज सुधारकों ने स्त्रियों की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया। यहां तक कि आजादी के बाद हमारे संविधान में स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार दिए गए। इससे स्त्रियों को हर क्षेत्र में आगे आने का अवसर मिला।

धुमिल होती छवि को नए रंगों से उकेरा
अंधेरे में गुम नारी को दिया रोशनी का नया सवेरा

संदर्भ सूचि:


1. डॉ.प्रभात कुमार भट्टाचार्य, 'गांधी दर्शन', पृष्ठ–9
2. डॉ.वी.एस. इंगले, स्कॉलरली रिसर्च जनरल फॉर इंटरडिशीपलिनरी स्टडीज, पृष्ठ–623
3. यंग इण्डिया – 15 सितम्बर 1921
4. डॉ. जितेन्द्र शर्मा, 'गांधी चिंतन में नारी विमर्श' पृष्ठ–3
5. महात्मा गांधी, 'मेरे सपनों का भरत', संस्करण – 1995, राजघाट, वाराणसी, पृष्ठ–124
6. काका साहब कालेलकर, बापू के पत्र, आश्रम की बहनों को, पृष्ठ–16
7. यंग इंडिया, जुलाई 1921, पृष्ठ–229
8. यंग इंडिया, 26 अगस्त 1926
9. यंग इंडिया, 18 अगस्त 192।
10. हिन्दी नवजीवन – 06 सितम्बर 1928
11. सम्पूर्ण गांधी वाड्मय, खण्ड--60, पृष्ठ–73
12. कल्याणी दुबे, 'छत्तीसगढ़ में नारी जागरण', पृष्ठ–68
13. विश्व प्रकाश गुप्त एवं मोहिनी गुप्त, स्वतंत्रता संग्राम और महिलायें, पृष्ठ–23
14. डॉ. एग्नेस ठाकुर, 'मध्यप्रांत एवं बरार में दलीय राजनीति या स्वाधीनता आंदोलन, पृष्ठ–8


CamScanner